कार्य सिद्धि काल भैरव दीक्षा

जीवन अनेक प्रकार के संयोगों से भरा हुआ है, अनेक प्रकार की **विषमताओं** से युक्त है वर्तमान युग में पग-पग पर इतनी **बाधायें** हैं, **परेशानियां** हैं, **शत्रु** हैं कि ऐसी स्थिति में व्यक्ति के लिये एक ही मार्ग रह जाता है, जिसके द्वारा वह पूर्ण रूप से **विजयी** हो सकता है और अपने जीवन की प्रत्येक समस्या पर विजय प्राप्त कर सकता है, वह मार्ग है- **दीक्षा-साधना** का मार्ग।

प्राचीन काल से अब तक **दीक्षा** और **साधनाओं** का आश्रय लेकर अनेकों...या यों कहें, कि सभी कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होते रहे हैं- हो भी रहे हैं। दीक्षा और साधनाओं के अनुसंधान कर्ताओं ने कुछ ऐसी **साधनाओं** का अनुसंधान किया, जो कि व्यक्ति के **दैनिकचर्या** के **संकट** और सभी **परेशानियों** का सहज निदान बन सकें। इस प्रकार की **साधनाओं** में **बटुक भैरव की दीक्षा** और **साधना** श्रेष्ठतम साधना मानी गई है, जिसका फल तत्क्षण मिलता है।

शास्त्रों में भी **बटुक भैरव** की महिमा वर्णित हैं- **ब्रह्म रूप, पर ब्रह्म रूप, पूर्ण रूप, निष्कल रूप में- वांगमनसागोचर, विश्वातीत, स्वप्रकाश, पूर्णाहंभाव एवं सकल रूप में- क्षोभण, मन्यु, तत्पुरूष आदि।**

इस **दीक्षा** से साधक के अंदर **तेजस्विता** उत्पन्न होती है, जिसके कारण यदि उसके **शत्रु** हैं, तो वो उसके सामने आते ही **कांतिहीन** हो जाते हैं और **शक्तिहीन** होकर साधक के सम्मुख खड़े नहीं रह पाते हैं।

साधक इस दीक्षा से पूर्ण **पौरूषवान** होकर समस्त **समस्याओं** को अपने **साधनात्मक पुरूषार्थ** से हल कर लेता है।

सद्गुरू अपने **शिष्य** को **भयभीत, कायरता, असफलता, उदास, चिंता** युक्त नहीं देखना चाहते है। वह चाहते है कि उनका शिष्य हर परिस्थिति में **पूर्ण पौरूषता** के साथ **बाधाओं** को धकेलकर **भौतिक** और **आध्यात्मिक** पथ पर अग्रसर हो। मगर ऐसा तभी हो सकता है जब शिष्य **दैवीय शक्ति** को **जप, तप** आदि के माध्यम से अपने अंदर समाहित करता है। आज कल **आत्मबल** की कमी, जीवन शैली और परिस्थितियों के वजह से **शिष्य** पूर्ण रूप से **दैवीय शक्ति** को पाने में **असमर्थ** हो रहा है। इसी कारण **सद्गुरूदेव** अपनी असीम कृपा से स्वयं **तपस्या** का एक हिस्सा शिष्य को **दीक्षा** के रूप में प्रदान करते हैं। जिससे **साधक, शिष्य रोग, अड़चने, शत्रु रूपी बाधाओं** को समाप्त कर सभी कार्यों में **सफलता** प्राप्त कर **पूर्णत्व** की ओर अग्रसर हो सकता है।

न्यौछावर ₹1750

तीन पत्रिका सदस्य बनाने पर यह दीक्षा उपहार स्वरूप प्रदान की जायेगी।

इच्छुक दीक्षा प्राप्त करने वाले साधक का नाम एवं पता

नाम.....

.....

अपनी फोटो व तीन पत्रिका सदस्य का पूर्ण पता न्यौछावर राशि के साथ कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर भेजें।